

سُورَةُ التَّحْرِيمِ

Surah 66 — At-Tahrim (The Prohibition) · Medinan · 12 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِي مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ

ऐ रसूल जो चीज़ खुदा ने तुम्हारे लिए हलाल की है तुम उससे अपनी बीवियों की खुशनूदी के लिए क्यों किनारा कशी करो और खुदा तो बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

2

قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ

खुदा ने तुम लोगों के लिए कसमों को तोड़ डालने का कफ़ार मुकर्रर कर दिया है और खुदा ही तुम्हारा कारसाज़ है और वही वाकिफ़कार हिकमत वाला है

3

وَإِذْ أَسْرَ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ ۖ حَدِيثٌ ۚ فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ ۖ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضُهُ ۖ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ ۖ قَالَتْ مَنْ أَنبَأَكَ هَذَا ۚ قَالَ نَبَأَنِيَ الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ

और जब पैग़म्बर ने अपनी बाज़ बीवी (हफ़सा) से चुपके से कोई बात कही फिर जब उसने (बावजूद मुमानियत) उस बात की (आयशा को) ख़बर दे दी और खुदा ने इस अम्र को रसूल पर ज़ाहिर कर दिया तो रसूल ने (आयशा को) बाज़ बात (किस्सा मारिया) जता दी और बाज़ बात (किस्साए यहद) टाल दी गरज़ जब रसूल ने इस वाकिये (हफ़सा के अफ़शाए राज़) कि उस (आयशा) को ख़बर दी तो हैरत से बोल उठीं आपको इस बात (अफ़शाए राज़) की किसने ख़बर दी रसूल ने कहा मुझे बड़े वाकिफ़कार ख़बरदार (खुदा) ने बता दिया

4

إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا ۚ وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ
وَجِبْرِيلُ وَصَلِحُ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ

(तो ऐ हफ़सा व आयशा) अगर तुम दोनों (इस हरकत से) तौबा करो तो खैर क्योंकि तुम दोनों के दिल टेढ़े हैं और अगर तुम दोनों रसूल की मुखालेफ़त में एक दूसरे की अयानत करती रहोगी तो कुछ परवा नहीं (क्यों कि) खुदा और ज़िबरील और तमाम ईमानदारों में नेक शरूष उनके मददगार हैं और उनके अलावा कुल फरिश्ते मददगार हैं

5

عَسَىٰ رَبُّهُ ۚ إِنْ طَلَّقَكُنَّ أَنْ يُبَدِّلَهُ ۚ أَزُوجًا خَيْرًا ۚ ا مِّنْكُمْ مُّسْلِمٌ ۚ مُّؤْمِنَةٌ ۚ
قَنْتٌ ۚ تَبَّتْ عِبْدَتٌ ۚ سَحَّتْ ۚ تَبَّتْ ۚ وَأَبْكَارٌ ۚ ا

अगर रसूल तुम लोगों को तलाक़ दे दे तो अनक़रीब ही उनका परवरदिगार तुम्हारे बदले उनको तुमसे अच्छी बीवियाँ अता करे जो फ़रमाबरदार ईमानदार खुदा रसूल की मुतीय (गुनाहों से) तौबा करने वालियाँ इबादत गुज़ार रोज़ा रखने वालियाँ ब्याही हुई

6

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ قُوا ۚ أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا ۚ ا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا
مَلَائِكَةٌ غِلَظٌ ۚ شِدَادٌ ۚ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ

और बिन ब्याही कुवारियाँ हो ऐ ईमानदारों अपने आपको और अपने लड़के वालों को (जहन्नुम की) आग से बचाओ जिसके इंधन आदमी और पत्थर होंगे उन पर वह तन्दखू सख्त मिज़ाज़ फ़रिश्ते (मुकरर) हैं कि खुदा जिस बात का हुक्म देता है उसकी नाफरमानी नहीं करते और जो हुक्म उन्हें मिलता है उसे बजा लाते हैं

7

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَا تَعْتَذِرُوا ۚ ا الْيَوْمَ ۚ ا إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

(जब कुफ़रार दोज़ख के सामने आएँगे तो कहा जाएगा) काफ़िरों आज बहाने न ढूँढो जो कुछ तुम करते थे तुम्हें उसकी सज़ा दी जाएगी

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ تُوبُوا ۚ إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً ۚ نَّصُوحًا ۚ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُكَفِّرَ عَنْكُمُ
 سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُم جَنَّاتٍ ۖ تَجْرَىٰ مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يَوْمَ لَا يُخْزَىٰ اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ
 ءَامَنُوا ۚ مَعَهُ ۚ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا
 وَآغْفِرْ لَنَا ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ

ऐ ईमानदारों खुदा की बारगाह में साफ़ खालिस दिल से तौबा करो तो (उसकी वजह से) उम्मीद है कि तुम्हारा परवरदिगार तुमसे तुम्हारे गुनाह दूर कर दे और तुमको (बेहिश्त के) उन बागों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें जारी हैं उस दिन जब खुदा रसूल को और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाए हैं रूसवा नहीं करेगा (बल्कि) उनका नूर उनके आगे आगे और उनके दाहिने तरफ़ (रौशनी करता) चल रहा होगा और ये लोग ये दुआ करते होंगे परवरदिगार हमारे लिए हमारा नूर पूरा कर और हमें बख्श दे बेशक तू हर चीज़ पर कादिर है

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَاهُم جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ
 الْمَصِيرُ

ऐ रसूल काफ़िरों और मुनाफ़िकों से जेहाद करो और उन पर सख्ती करो और उनका ठिकाना जहन्नुम है और वह क्या बुरा ठिकाना है

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا ۖ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۚ أَمْرَأَتَ نُوحٍ ۚ وَامْرَأَتَ لُوطٍ ۚ ۚ كَانَتَا تَحْتَ
 عَبْدَيْنِ مِّنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ وَقِيلَ ادْخُلَا
 النَّارَ مَعَ الدَّٰخِلِينَ

खुदा ने काफ़िरों (की इब्रत) के वास्ते नूह की बीवी (वाएला) और लूत की बीवी (वाहेला) की मसल बयान की है कि ये दोनो हमारे बन्दों के तसरूफ़ थीं तो दोनों ने अपने शौहरों से दगा की तो उनके शौहर खुदा के मुकाबले में उनके कुछ भी काम न आए और उनको हुक्म दिया गया कि और जाने वालों के साथ जहन्नुम में तुम दोनों भी दाखिल हो जाओ

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا ۖ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ أَمْرَأَتَ فِرْعَوْنَ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ
بَيْتًا ۚ فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِي مِنَ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ ۚ وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ

और खुदा ने मोमिनीन (की तसल्ली) के लिए फिरऔन की बीवी (आसिया) की मिसाल बयान फ़रमायी है कि जब उसने दुआ की परवरदिगार मेरे लिए अपने यहाँ बेहिश्त में एक घर बना और मुझे फिरऔन और उसकी कारस्तानी से नजात दे और मुझे ज़ालिम लोगो (के हाथ) से छुटकारा अता फ़रमा

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهِ مِنْ رُوحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَاتِ
رَبِّهَا وَكُتِبَ ۖ وَكَانَتْ مِنَ الْغُنَيْنِ

और (दूसरी मिसाल) इमरान की बेटी मरियम जिसने अपनी शर्मगाह को महफूज़ रखा तो हमने उसमें रूह फूंक दी और उसने अपने परवरदिगार की बातों और उसकी किताबों की तस्दीक की और फरमाबरदारों में थी